Sanskrita Ki Hi Sari Bhashayem Santana

संस्कृत की ही सारी भाषायें सन्तान

Document Information

Text title : Sanskrita Ki Hi Sari Bhashayem Santana

File name : sanskRRitakIhIsArIbhAShAyeMsantAna.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

Sanskrita Ki Hi Sari Bhashayem Santana

संस्कृत की ही सारी भाषायें सन्तान

संस्कृत-माता की ही सारी भाषायें सन्तान हैं
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी जीवनदान हैं । ०
सिन्धी हिन्दी या आसामी उड़िया या बङ्गाली हो,
गुजराती गुरुमुखी मराठी कश्मीरी गोरखाली हो,
दक्षिण की या तमिल तेलगू कन्नड या मलयाली हो,
अपभ्रंश या प्राकृत भाषा अर्द्धमागधी पाली हो,
संस्कृत से ही मिला सभी को गौरव आज महान् है,
इससे ही यह सारी पातीं अब भी जीवनदान हैं । १
संस्कृत से ही ये भाषायें अपना रूप सजाती हैं,
इसके आभरणों से ही ये निज सौन्दर्य बढ़ाती हैं,
अपनी अच्छी बात इसी की वाणी में कह पाती हैं,
इसके ही पङ्खों पर चढ़कर दूर-दूर उड़ जाती हैं,
संस्कृत ही इन भाषाओं की शोभा-शक्ति-निधान हैं,
संस्कृत से ही यह सव पातीं अब भी जीवनदान हैं । २
आज राष्ट्रभाषा के पद पर आसीना जो हिन्दी है,
संस्कृत से ही उसे मिली यह राजतिलक की बिन्दी है,
इसका ही अब भी बल पाकर वह उन्नति कर सकती है,
तभी देश की आवश्यकतायें पूरी कर सकती है,
संस्कृत से ही आज मिला यह हिन्दी को वरदान है,
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी जीवनदान हैं । ३

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskrita Ki Hi Sari Bhashayem Santana

pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*